🕮 अनुक्रमणिका 🕮

गद्य एवं पद्य (Prose and Poetry)				
क्रम	**प्रकरण**	**विधा**	भाषायी कौशल (Language Skills)	**पृष्ठ संख्या**
1	बड़े भाई साहब (मुंशी प्रेमचंद)	कहानी	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	5
2	बहादुर (मुंशी प्रेमचंद)	कहानी	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	17
3	चीफ की दावत (भीष्म साहनी)	कहानी	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	32
4	शुरू के आदमी (जवाहर लाल नेहरू)	पत्र	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	43
5	कबीर के दोहे (कबीर दास)	दोहा	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	48
6	मेरा नया बचपन (सुभद्राकुमारी चौहान)	कविता	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	53
7	भटकन (शैल रस्तोगी)	एकांकी	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	58
व्याकरण (Grammar)				
1	संज्ञा (Noun)		पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	71
2	सर्वनाम (Pronoun)		पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	74
3	क्रिया (Verb)		पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	77
4	विशेषण (Adjective)		पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	79
5	क्रिया विशेषण (Adverb)		पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	82
6	मुहावरे (Idioms)		पठन कौशल (Reading Skill)	85
7	लोकोक्ति (Proverb)		पठन कौशल (Reading Skill)	87
8	वाक्यांश के लिए एक शब्द (One word substitution)		पठन कौशल (Reading Skill)	90
9	विलोम शब्द (Antonyms)		पठन कौशल (Reading Skill)	91
10	पर्यायवाची शब्द (Synonyms)		पठन कौशल (Reading Skill)	92

🕮 अनुक्रमणिका 🕮

सृजनात्मक लेखन (Creative writing)			
क्रम	विधा	भाषायी कौशल (Language Skills)	पृष्ठ संख्या
1	पत्र लेखन (Letter writing)	लेखन कौशल (Writing Skills)	97
2	अपठित गद्यांश (Unseen passage)	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	106
3	निबंध लेखन (Essay writing)	लेखन कौशल (Writing Skills)	119
4	चित्र वर्णन (Picture composition)	लेखन कौशल (Writing Skills)	131
5	भाषण लेखन (Speech writing)	लेखन कौशल (Writing Skills)	140
6	डायरी लेखन (Diary writing)	लेखन कौशल (Writing Skills)	150
7	सारांश लेखन (Summary writing)	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	160
8	टिप्पणी लेखन (Note making)	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	168
9	प्रपत्र भरना (Information transfer)	पठन एवं लेखन कौशल (Reading and Writing Skills)	181
श्रवण कौशल (Listening Skill)			
1	वार्तालाप (संवाद) एवं उद्घोषणा (Conversation and announcements)	श्रवण एवं लेखन कौशल (Listening and Writing Skills)	190
2	समाचार (News)	श्रवण एवं लेखन कौशल (Listening and Writing Skills)	195
3	कहानी (Story)	श्रवण एवं लेखन कौशल (Listening and Writing Skills)	197
4	साक्षात्कार एवं व्यक्तित्व परिचय (Interview and Introducing personality)	श्रवण एवं लेखन कौशल (Listening and Writing Skills)	201
मौखिक अभिव्यक्ति कौशल (Speaking Skill)			
1	मौखिक अभिव्यक्ति कौशल – परिचय, महत्व, उद्देश्य, विधियाँ, समस्याएँ, समाधान एवं विषय	मौखिक अभिव्यक्ति कौशल (Speaking Skill)	205

बड़े भाई साहब

लेखक परिचय	
पूरा नाम	धनपतराय
उपनाम	प्रेमचंद
जन्म	31 जुलाई 1880
जन्म स्थान	लमही, वाराणसी, उत्तरप्रदेश
मृत्यु	8 अक्टूबर 1936
मृत्यु स्थान	वाराणसी, उत्तरप्रदेश
माता–पिता	आनंदी देवी, अजायबराय
कार्यक्षेत्र	अध्यापक, लेखक, पत्रकार
विधा	कहानी और उपन्यास
प्रमुख कृतियाँ (उपन्यास)	गोदान, कर्मभूमि, सेवासदन, निर्मला आदि
प्रमुख कृतियाँ (कहानी)	ईदगाह, पूस की रात, दो बैलों की कथा, शतंरज के खिलाड़ी, बड़े भाई साहब, कफन आदि
प्रमुख कृतियाँ (नाटक)	संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी
पुरस्कार एवं सम्मान	डाक टिकट जारी, प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना आदि

.....

मेरे बड़े भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े थे, लेकिन तीन दरज़े आगे। उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था जब मैंने शुरू किया, लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वह जल्दीबाजी से काम लेना पसंद न करते थे। इस भवन की बुनियाद खूब मजूबत डालना चाहते थे जिस पर आलीशान महल बन सके। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी–कभी तीन साल भी लग जाते थे। बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पाएदार बने।

मैं छोटा था, वह बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा जन्मसिद्ध अधिकार था, और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ।

प्रश्न – 2 निम्नलिखित वाक्यांशों में से सही वाक्यों को चुनें एवं उचित अक्षर को कोष्ठक में लिखें। एक उदाहरण दिया गया है।

उदाहरण	ग	क– शामनाथ के घर जर्मनी से मेहमान आए थे।
		ख– शामनाथ की माँ अपनी सहेली के घर जाना चाहती थी
		ग– शामनाथ की माँ खर्राटे लेती थी।
		घ– साहब को गाँव के लोग अच्छे लगते थे।
		ड– जिस दिन घर में माँस–मच्छी बनती, उस दिन माँ खाना नहीं खाती थी।
		च– शामनाथ ने मेहमानों के लिए कोई खास तैयारी नहीं की थी।
		छ– माँ को सोते देख साहब गुस्से से आग बबूला हो गए।
		ज– अंत में माँ फुलकारी बनाने के लिए तैयार हो गई थी।

प्रश्न – 3 नीचे दिए गए शब्दों के करीबी अर्थ दायीं ओर से चुनकर उनके वर्ण कोष्ठक में लिखें। एक उदाहरण दिया गया है।

उदाहरण – बहस	ड	
1– मुकम्मल		क– प्रबंध
2– इंतजाम		ख– कठिन
3– फूल		ग– अवसर
4– सहसा		घ– रुकावट
5– अड़चन		**ड– विचार–विमर्श**
6– मुश्किल		च– पूर्ण
7– पसंद		छ– अतिथि
8– मेहमान		ज– चाह
9– मौका		झ– अचानक
		ञ– खुशबू
		ट– पुष्प

प्रश्न – 4 निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

1– हिरन होना –

भाषायी कौशल (Language Skills)

लेखन कौशल (Writing Skills) –

सामान्य रूप से भाषा के दो रूप प्रचलित होते हैं। मौखिक एवं लिखित। जब हम अपने विचारों को लिपिबद्ध करके उनका उपयोग करते हैं, तो इस प्रक्रिया को लिखित अभिव्यक्ति या लेखन कहते हैं।

लेखन कौशल का उद्देश्य एवं महत्व – वर्तमान समय में लेखन कौशल के उद्देश्य एवं महत्व को निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है –

- विद्यार्थी सोचने एवं निरीक्षण करने के उपरान्त भावों को क्रमबद्ध रूप से व्यक्त कर सकेगा।
- विद्यार्थी सुपाठ्य लेख लिख सकेगा।
- विद्यार्थी शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिख सकेगा।
- विद्यार्थियों को विभिन्न शैलियों से परिचित करवाना।
- विद्यार्थी ध्वनि, ध्वनि समूहों, शब्द, सूक्ति, मुहावरों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। विराम चिन्हों का यथोचित प्रयोग कर सकेगा।
- विद्यार्थी में लेखन कला का विकास करना जिससे बालक अपने विचारों को सरल एवं बोधगम्य भाषा में प्रस्तुत कर सके।
- विद्यार्थी व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा। विभिन्न रचना वाले वाक्यों का शुद्ध गठन करेगा।
- विद्यार्थी अभीष्ट सामग्री ही प्रस्तुत करेंगे। क्रमबद्धता बनाए रखेंगे।
- विद्यार्थी भाव की दृष्टि से अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता ला सकेंगे।

लेखन कौशल विकास सम्बन्धी समस्याएँ – विद्यार्थियों के लेखन कौशल के विकास के मार्ग में भाषा शिक्षक के समक्ष अनेकों समस्याएँ आती है। जिनमें प्रमुख हैं –

अपठित गद्यांश

अपठित का अर्थ है, जिसे पढ़ा न गया हो। अपठित गद्यांश का अर्थ है, ऐसा गद्यांश जिसे पाठ्यपुस्तकों में नहीं पढ़ा गया है। अपठित गद्यांश के पीछे उद्देश्य विद्यार्थी की अर्थग्रहण क्षमता को विकसित करना है। ऐसे गद्यांशों को पढ़कर समझने, उनका चिंतन–मनन करने तथा उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देने से विद्यार्थी के भीतर भाषा को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास बढ़ता है।

अपठित गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें।

1– सबसे पहले दिए गए गद्यांश को सावधानी व एकाग्रता से कम से कम दो बार पढ़िए।

2– संपूर्ण गद्यांश का कथ्य या केन्द्रीय भाव अपने मस्तिष्क में ग्रहण कीजिए।

3– प्रत्येक प्रश्न का उत्तर गद्यांश में समाहित होता है। अतः एक–एक करके प्रश्नों के उत्तर प्रदत्त गद्यांश में से ढूँढ़कर रेखांकित करें।

4– प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में निहित होते हैं, अतः यदि एक बार उत्तर न मिले तो परेशान होने की आवश्यकता नहीं। एक बार पुनः प्रयास कीजिए। उत्तर अवश्य मिलेगा।

4– प्रत्येक प्रश्न का सटीक, वास्तविक व स्पष्ट उत्तर देने के लिए प्रश्न की मूल प्रकृति को ध्यान में रखिए।

5– उत्तर अपनी भाषा में लिखें। भाषा सरल, सहज, स्पष्ट एवं संप्रेषणनीय होनी चाहिए।

6– प्रश्नोत्तर लिखते समय अपनी ओर से बढ़ा–चढ़ाकर नहीं लिखना चाहिए या अतिरिक्त उदाहरण भी नहीं देना चाहिए।

अपठित गद्यांश – 1

महान विभूतियाँ प्रत्येक देश में आदर पाती हैं। ये महापुरूष हमारा मार्गदर्शन करके हमें सत्य, धर्म, शान्ति, प्रेम और अहिंसा के मार्ग पर ले जाती है। ऐसी ही एक विभूति है – फ्लोरेंस नाइटिंगेल

आधुनिक नर्सिंग की स्थापना कुमारी फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने ही की थी। इनका जन्म 12 मई, 1820 ई. में इटली के फ्लोरेंस शहर में हुआ था। ये एक धनवान अंग्रेज माता–पिता की पुत्री थीं। इनके माता–पिता इन्हें खूब ऊँची शिक्षा देना चाहते थे। इन्होंने अपने माता–पिता की इच्छा पूर्ण की। इन्होंने लेटिन, गणित, विज्ञान, राजनीति की शिक्षा तो ली ही, साथ में जर्मन, फ्रेंच और इटैलियन भाषाएँ भी सीखीं।

पहला चरण – सबसे पहले जिस विषय पर आपको निबंध लिखना है उस विषय पर आप खूब सोचे। आप उस विषय पर जितना जानते हैं उसे एक कागज पर लिख लें।

दूसरा चरण – सारी जानकारी एकत्र हो जाए तब उसे क्रमवार प्रस्तुत करना जरूरी है। जानकारी होने से ज्यादा महत्वपूर्ण है जानकारी की आकर्षक प्रस्तुति। निबंध का एक स्वरूप, ढांचा या सरल शब्दों में कहें तो खाका तैयार करें। सबसे पहले क्या आएगा, उसके बाद और बीच में क्या आएगा और निबंध का अंत कैसे होगा।

तीसरा चरण – निबंध के लिए विषय को चार प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है –

1– **भूमिका या प्रस्तावना –** इस भाग में विषय का परिचय दिया जाता है. प्रस्तावना अत्यंत आकर्षक, सारगर्भित और प्रभावपूर्ण होनी चाहिए।

2– **विषय विस्तार या विषय का महत्व –** इसमें विषय का महत्व, विषय से संबंधित आवश्यक पहलू, आंकड़े, सूचना आदि शामिल होंगे। विषय को विचार की क्रमिक इकाइयों में विभाजित करें। इन विचार बिंदुओं को श्रृंखलाबद्ध तथा तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करें। किसी भी नए तथ्य, विचार अथवा तर्क का प्रारम्भ नए अनुच्छेद से किया जाना चाहिए।

3– **पक्ष और विपक्ष में विचार –** यदि निबंध में किसी विषय के दो पहलू हैं तो उसके पक्ष और विपक्ष में विचार दिए जाते हैं, परन्तु यदि निबंध के केन्द्र में कोई वस्तु है तो उपयोगिता, लाभ–हानि, फायदे–नुकसान आदि लिखे जा सकते हैं। अगर निबंध किसी महापुरुष पर लिखा जा रहा है उनके बचपन, स्वभाव, महान कार्य, देश व समाज को योगदान, उनके विचार, प्रासंगिकता और अंत में उनके प्रति आपके विचार दिए जा सकते हैं।

4– **निष्कर्ष या उपसंहार –** निबंध के अंत को निष्कर्ष या उपसंहार कहते हैं। यहाँ आकर आप विषय को इस तरह समेटते हैं कि वह संपूर्ण लगे। इसमें लेखक कभी प्रतिपादित विषय का सार दे सकता है, कभी वह विषय की स्थापना से सम्बंधित अंतिम तर्क को प्रस्तुत करके निबंध को समाप्त कर सकता है और कभी अपने मंतव्य अथवा निष्कर्ष को प्रामाणिक ढंग से कहने के लिए किसी काव्यांश को उद्धृत करते हुए निबंध का समापन कर सकता है।

सबसे अहम शुरुआत है –

कहते हैं पहली बार जो प्रभाव पड़ता है वह आखिर तक रहता है। आपको निबंध लिखना है तो महापुरुषों के अनमोल वचन से लेकर कविताएं, शेरो–शायरी, सूक्तियां, चुटकुले, प्रेरक प्रसंग, नवीनतम आंकड़े कंठस्थ होने चाहिए। अपनी बात को कहने का आकर्षक अंदाज अक्सर परीक्षक या निर्णायक को लुभाता है। विषय से संबंधित सारगर्भित कहावतों या मुहावरों से भी निबंध का आरंभ किया जा सकता है। विषय को क्रमवार विस्तार देने में ना तो जल्दबाजी करें ना ही देर। निबंध के हर भाग में पर्याप्त जानकारी दें। हर अगला अनुच्छेद एक नई जानकारी लेकर आएगा तो पढ़ने वाले की उसमें दिलचस्पी बनी रहेगी। अनावश्यक विस्तार जहां पढ़ने वाले को चिढ़ा सकता है वहीं अति संक्षेप आपकी अल्प जानकारी का संदेश देगा। अतः शब्द सीमा का विशेष ध्यान रखें। दी गई शब्द सीमा को तोड़ना भी निबंध लेखन की दृष्टि से गलत है।

अंत भला तो सब भला – जिस तरह आरंभ महत्वपूर्ण है उसी तरह अंत में कहीं गई कोई चुटीली या रोचक बात का भी खासा असर होता है। विषय से संबंधित शायरी या कविता हो तो क्या बात है। अंत यानी निष्कर्ष/उपसंहार में प्रभावशाली बात कहना अनिवार्य है। सारे निबंध का सार उसमें आ जाना चाहिए।

5)– जनसंख्या वृद्धि

भाषण लेखन

भाषण लिखना एक कला है। भाषण औपचारिक और अनौपचारिक अवसरों पर सार्वजनिक रूप से दिया जाने वाला एक वक्तव्य है। भाषण कई प्रकार के होते हैं। जैसे स्वागत भाषण, विदाई भाषण, सामाजिक मुद्दों पर आधारित भाषण आदि। भाषण का अर्थ प्रायः बोलने से लिया जाता है। अतः यह मौखिक होता है। बहुत से वक्ता लिखकर भाषण करना पसंद करते हैं। उससे भाषण उतना प्रभावशाली नहीं हो पाता। भाषण लेखन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

१– सभा–संयोजक के प्रति नम्रतापूर्वक आभार प्रकट करना चाहिए।
२– संक्षिप्त भूमिका के बाद भाषण के विषय की स्पष्ट सूचना देनी चाहिए।
३– भाषण की भाषा विषय के अनुकूल, ओजस्वी, प्रभावशाली तथा स्पष्ट होनी चाहिए।
४– भाषण के बीच–बीच मनोरंजक बातें करनी चाहिए, जिससे श्रोता ऊबे नहीं।
५– आमतौर पर भाषण वर्तमान काल में लिखना चाहिए।
५– भाषण के अंत में भाषण का निष्कर्ष संक्षेप में दोहराना चाहिए।
६– भाषण ऐसा प्रभावशाली होना चाहिए कि श्रोताओं के दिल और दिमाग को अपनी और आकर्षित कर ले।
७– भाषा श्रोताओं के अनुरूप होनी चाहिए।
८– अंत में श्रोताओं को धन्यवाद और आरंभ में अध्यक्ष, प्रमुख अतिथि तथा श्रोताओं के लिए सादर – संबोधन संबंधी शब्दावली का प्रयोग होना चाहिए।
९– भाषण के दौरान निरीक्षण द्वारा श्रोताओं की प्रतिक्रिया देख लेनी चाहिए।
१०– भाषण जोश/उन्माद पैदा करने वाला होना चाहिए।
११– भाषाण में जहाँ तक हो सके मुहावरों, कहावतों एवं उदाहरणों का प्रयोग करना चाहिए।
१२– एक अच्छे वक्ता को प्रत्येक विषय को जन–जीवन से जोड़ना चाहिए।
१३– भाषण में सजीवता होनी चाहिए।
१४– भाषण में अनावश्यक बात का उल्लेख नहीं होना चाहिए एवं बहुत लम्बा नहीं होना चाहिए।
१५– भाषण में पूर्णता होनी चाहिए।
१६– विषय को उपविषय में बाँटकर उनका विस्तार करना चाहिए।
१७– भाषण का प्रस्तुतिकरण क्रमानुसार, सरल और स्पष्ट होना चाहिए।
१७– भाषण के दौरान प्रयुक्त होने वाले तथ्य तथा विचार विषय से संबंधित होने चाहिए।

भाषण लेखन की प्रकिया –

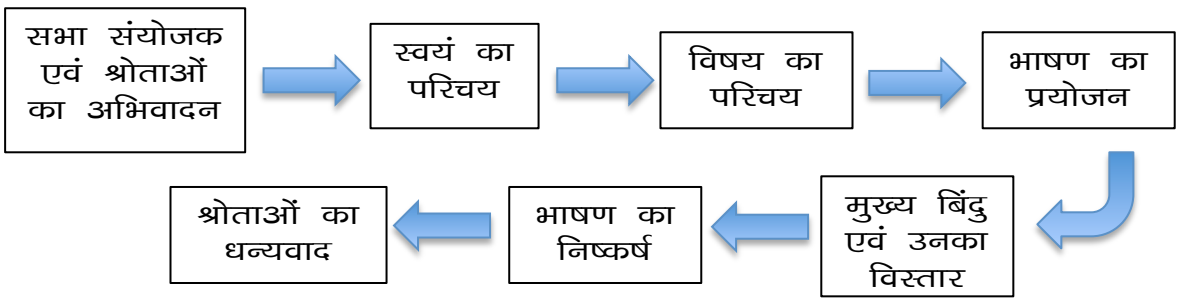

एक उदाहरण

14 अगस्त 2015,

प्रिय डायरी,

आज का दिन तो बड़ा थका देना वाला रहा लेकिन मैं आशा करता हूँ कि ऐसा दिन मेरी ज़िंदगी में रोज आए। जैसा कि तुम जानती हो। आज सुबह 7 बजे घर से गाड़ी उठाकर हम परिवार के सभी लोग माउन्ट आबू की सैर पर निकल पड़े। अहमदाबाद की यह असहनीय गर्मी हमें माउन्ट आबू की ओर अनायास ही अपनी ओर खींच रही थी। बीच में ख्याल आया कि क्यों न अम्बा जी के दर्शन करते हुए चलें। पिताजी का यह विचार मुझे जँच गया, और लगभग 10 बजे हम अम्बा जी के मुख्य मंदिर पहुँच गए। मंदिर में श्रद्धालुओं की लम्बी लाइन देखकर एक बार तो मेरा मन डिग गया। सोचा बाहर से ही नमन करके आगे बढ़ते हैं। फिर मन में ख्याल आया कि इतनी दूर से आए हैं तो दर्शन तो करने ही चाहिए। खैर! लगभग 1 घंटे 20 मिनट के बाद हम दर्शन करने में सफल रहे। नाश्ते का समय निकल चुका था। हमने चाय के दुकान से चाय लेकर, घर से साथ लाई हुई माता जी के हाथ की स्वादिष्ट कचौड़ियों का आनंद लिया। लगभग 1 घंटे और चलने के बाद हम आबू रोड़ पहुँचे। आबू रोड़ से हमने जैसे ही माउन्ट आबू की चढ़ाई शुरू की। आबू की मनमोहक पहाड़ियाँ हमें दिखाई देने लगी। 27 किलोमीटर लम्बे इस पहाड़ी रास्ते पर गाड़ी चलाते हुए मुझे बहुत आनंद आया। एक बजते-बजते हम माउन्ट आबू पहुँच गए। हमने होटल पहले से ही बुक करवा लिया था। होटल में पहुँचकर अपना सामान रखकर हम खाने की तलाश में निकल गए। खाना खाने के बाद सुस्ती और थकान की वजह से होटल में थोड़ा आराम करने के बाद हम जैन मंदिर और सनसेट पोंइट जा पहुँचे। जैन मंदिर की कारीगरी देखकर मैं भौंचक्का सा रह गया। कितने सालों में, कितनी मेहनत से यह मंदिर बना होगा। सनसेट पोंइट का नज़ारा बेहद मनमोहक था। पहाड़ों के बीच अस्त होते सूर्य को देखने का अपना ही आनंद था। शाम को हमने दाल-बाटी का आनंद उठाया। राजस्थान आकर अगर दाल-बाटी न खाई तो क्या खाया? खाना और कुल्हड़ वाला दूध पीकर हम अपने होटल में वापस आ गए। थोड़ी देर टी.वी देखकर और परिजनों से बात करते-करते आँखें भारी होने लगी हैं।

खैर! कल का दिन भी बेहद व्यस्त रहने वाला है। चलो आज के लिए बस इतना ही। शुभ रात्रि!

टिप्पणी लेखन

टिप्पणी लेखन में गद्यांश के मुख्य बिन्दुओं की तर्कसंगत, युक्तिसंगत एवं सारगर्भित जानकारी का समावेश होता है।

टिप्पणी लेखन एक कला है, जो कि अभ्यास से ही आती है। टिप्पणी लेखन बहुत और फैली हुई जानकारी को संक्षिप्त में और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है। टिप्पणी लेखन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

१– टिप्पणी लेखन करते समय प्रत्यक्ष कथन का उपयोग न करें।
२– टिप्पणी लेखन में अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम का प्रयोग करें।
३– जहाँ तक संभव हो, मूल गद्यांश के शब्दों, वाक्यांशों का प्रयोग न करें।
४– संक्षिप्तीकरण शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। जैसे डॉक्टर के लिए डॉ किलोमीटर के लिए कि.मी. आदि।
५– यह जरूरी नहीं है कि पूरे वाक्य में ही लिखा जाएँ। इसके स्थान पर वाक्यांशों का प्रयोग किया जा सकता है।
६– उदाहरण एवं दृष्टांत देने से बचना चाहिए।
७– ध्यान रहे कि मूल पाठ का कोई विषय छूट न जाए।
८– टिप्पणी में पूछी गई जानकारी गद्यांश के किसी भी भाग में हो सकती है।

टिप्पणी लेखन की प्रक्रिया –

गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़े

↓

टिप्पणी में पूछी गई जानकारी को पूरे गद्यांश में ढूँढ़ने का प्रयास करें

↓

उदाहरणों एवं अलंकारिक शब्दों को छोड़ें

↓

विषयानुसार एवं भावानुसार उसे क्रमबद्ध कीजिए

↓

अपनी भाषा में टिप्पणी लिखें

अब आप एक कहानी सुनेंगे। कहानी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

17.1– आदमी महात्मा के पास क्यों गया?

17.2– महात्मा ने आदमी को क्या कार्य सौंपा?

17.3– आदमी पूरी रात क्यों न सो सका?

17.4– सुबह महात्मा ने आदमी को क्या समझाया?

17.5– निम्नलिखित वाक्यांशों में से सही वाक्य के आगे (√) और गलत वाक्य के आगे (X) का निशान लगाए।

		सत्य	असत्य
1:–	आदमी सरकारी नौकरी करता था।	☐	☐
2:–	शहर में चारों ओर महात्मा की चर्चा थी।	☐	☐
3:–	आदमी की समस्या का समाधान महात्मा ने उसी पल कर दिया।	☐	☐
4:–	महात्मा के अनुसार, जीवन में समस्याएँ तो बनी ही रहेंगी।	☐	☐
5:–	हमें जीवन का आनंद उठाना सीखना चाहिए।	☐	☐